

فروری ۲۰۱۸ء

ماہنامہ

شعاع کلمہ

قَالَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى: قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ
بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب



نور ہدایت فاؤنڈیشن، حسینہ غفران مااب، چوک، لکھنؤ-۳

ISSN 2456-8384

Vol.-14, Issue-8

R.N.I NO. UPBIL/2004/13526

Pages:72

Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2017-19 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

Annual Rs. 200/-

February 2018

Per Copy- Rs.25/-

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ



حکیم الامت علامہ ہندی آیت اللہ سید احمد نقوی طاب ثراہ
ولادت: ۱۸/۱۲/۱۲۹۵ھ مطابق ۱۳/دسمبر/۱۸۷۸ء (جمعہ)
وفات: ۲۰/شعبان/۱۳۶۶ھ مطابق ۱۰/جولائی/۱۹۴۷ء (جمعرات)

SHUA-E-AMAL

Lucknow



NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufra Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

Per Copy 25/-
Annual 200/-

कुल पृष्ठ : 72

ISSN 2456-8384

वर्ष
14

अंक
8

न्यास संस्थापन

15 जमादिलउला 1424 हि० / 16 जुलाई 2003 ई०

पत्रिका विमोचन

15 जमादिलउला 1425 हि० / जुलाई 2004 ई०

पर्यवेक्षक:

मु० र० आबिद, गोलागंज लखनऊ

सलाहकार समिति

- प्रोफेसर अल्लामा अली मुहम्मद नकवी, अलीगढ़
- डॉ० महदी ख्वाजा पीरी, ईरान
- मौलाना हसन जफर नकवी, कराची
- कैप्टन सिकन्दर रिजवी, लखनऊ
- प्रोफेसर हुसैन कमालुद्दीन अकबर, इलाहाबाद
- डॉ० अरशद अली जाफरी, लखनऊ
- शायरे अहलैबैत रजा सिरसिवी, सिरसी
- सै० सैफ़ तकी नकवी, दिल्ली
- मुहम्मद आलिम, हुसैनाबाद, लखनऊ

बिस्मिल्ली तआला

नूरे हिदायत फाउण्डेशन के

इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

फरवरी— 2018 ई०

शुआ-ए-अमल

“लखनऊ”

संरक्षक

काएदे मिल्लत प्रोफेसर मौलाना सै० कल्बे जवाद नकवी साहब

माननीय नवाब रजा साहब, भोपाल

माननीय सै० अहमद अब्बास नकवी साहब, मुम्बई

सम्पादक

सै. मुस्तफ़ा हुसैन नकवी ‘असीफ़’ जायसी

उप-सम्पादक

कायम महदी नकवी ‘तज़हीब’ नगरौरी

आसिफ़ अब्बास नौगांवी

मिलने का पता

नूरे हिदायत फाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ - 3

Phone No: 0522-2252230

Mobile No: 08736009814 — 09335996808

प्रकाशक मुद्रक: सैय्यद मुस्तफ़ा हुसैन नकवी द्वारा स्वामी एस कल्बे जवाद नकवी के लिए निजामी प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट अपोजिट हसनैन मार्केट, चौक, लखनऊ (उ० प्र०) से मुद्रित तथा नूरे हिदायत फाउण्डेशन, इमामबाड़ा गुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक लखनऊ (उ० प्र०) से प्रकाशित।

सम्पादक: सैय्यद मुस्तफ़ा हुसैन नकवी

फरवरी - 2018

मासिक “शुआ-ए-अमल” लखनऊ

3

सम्पादन समिति

- ⇒ डॉ० अमानत हुसैन नकवी
- ⇒ हैदर अब्बास नकवी, इलाहाबाद
- ⇒ अमील शम्सी, लखनऊ
- ⇒ वासिफ अहमद नकवी 'समीर'
- ⇒ महदी रज़ा
- ⇒ मुहम्मद मुज़फ़्फ़र शाकिरी
- ⇒ शाहिद अली आजमी
- ⇒ जुलफ़ेकार हैदर आजमी
- ⇒ अलहाज मिर्जा हुमायूँ कदर
- ⇒ डॉ० आरिफ़ अब्बास
- ⇒ रेहान आलम, लखनऊ
- ⇒ सलमान हुसैन, लखनऊ
- ⇒ बिनते ज़हरा 'नदल हिन्दी'
- ⇒ अलहाज फ़रीद महदी रिज़वी

- ज़फ़र हुसैन रिज़वी ब्यूरोचीफ़ मुम्बई
- इरफ़ान हैदर, ब्यूरोचीफ़ मध्यप्रदेश
- कैफ़ तकी नकवी, ब्यूरोचीफ़ देहली

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526

▼▼▼
Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2017-2019

WEBSITE:

www.noorehidayatfoundation.org
www.naqeeblucknow.com

E_mail:

noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com
shuaeamallucknow@gmail.com

वार्षिक अंशदान

- 1- एक साल के लिए 200/-
- 2- पांच साल के लिए 800/-
- 3- लाईफ़ मिम्बरशिप 5000/-

विषय सूची

फरवरी 2018 ई०
जमादिउल अव्वल 1439 हि०

नं०	लेख व लेखक	पृष्ठ
1.	शहीदे इन्सानियत (किस्त-11) आयतुल्लाहिल उज़्मा सैय्यदुल उलमा सै० अली नकी नकवी	5
2.	मज़हब या ज़मीर (किस्त-3) आयतुल्लाहिल उज़्मा सैय्यदुल उलमा सै० अली नकी नकवी	13
3.	मुख्य समाचार इदारा	17

मासिक

“शुआ-ए-अमल”

(हिन्दी-उर्दू)

“ख़ानदाने इज्तेहाद नम्बर”

दैनिक नकीब लखनऊ

और नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन से प्रकाशित
सभी किताबों को डाउनलोड करने के लिए
लॉग आन करें हमारी वेबसाइट

Log on Our Website:

www.noorehidayatfoundation.org,
www.naqeeblucknow.com

शहीदे इन्सानियत

आयतुल्लाहिल उज्जमा सैय्यदुल उलमा मौलाना सै० अली नकी नकवी ताबा सराह

हसन बसरी को जब हुज्र और उनके साथियों के कत्ल का हाल मालूम हुआ तो पूछा कि क्या उन पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी गई? कफ़न दिया गया? और दफ़न किया गया और क़िब्ला रूख़ लाश रखी गई? मालूम हुआ कि यह सब किया गया। हसन ने कहा तो फिर बख़ुदा हुज्जत उनकी तमाम हो गई।¹ मतलब यह था कि लाशों के साथ इस्लामी अहकाम पर अमल उनके मुसलमान समझे जाने का सुबूत है तो फिर उनका खून मुबाह (जाएज़) क्योंकर हो सकता है।

रबी बिन ज़ियाद हारसी ने जो खुरासान के हाकिम थे हुज्र बिन अदी के कत्ल होने और मुसलमानों की बेहिंसी का तज़क़िरा किया और फिर जुमो के दिन मस्जिद में आ कर हाज़िरीन से कहा, ऐ लोगो! मैं इस ज़िन्दगी से आजिज़ आ चुका हूँ। अब मैं एक दुआ माँगता हूँ, तुम सब आमीन कहना। उसके बाद हाथ उठाये और कहा। खुदा वन्दा अगर रबीअ के लिए तेरे नज़दीक कुछ बेहतरी है तो जल्दी उसकी रूह क़ब्ज़ फ़रमा ले। उसके बाद मस्जिद से बाहर निकले, कुछ दूर न गए थे कि ज़मीन पर गिर पड़े और इन्तेक़ाल किया।²

खुद मुआविया को बाद में हुज्र के बेगुनाह कत्ल करने के जुर्म का एहसास पैदा हो गया था चुनौतिये जब वह मरजुल मौत में मुबतिला हुए और तकलीफ़ ज़्यादा हुई तो एक रोज़ अब्दुल्लाह बिन यज़ीद असदी उनके पास

आया। उसने देखा कि वह बहुत मुज़तरिब (बेचैन) हैं। उसने (खुशामदाना लब व लहजे में कहा) आपको इज़तेराब की क्या ज़रूरत है? अगर मर गए तो जन्नत में पहुँचे और अगर ज़िन्दा रहे तो मुसलमानों के जहाँ पनाह रहे। मुआविया ने कहा: “खुदा रहमत नाज़िल करे तुम्हारे वालिद पर, वह मुझे हुज्र बिन अदी के कत्ल से मना करते थे।” मुहम्मद बिन सीरीन की रिवायत है कि जब मुआविया का वक्ते वफ़ात करीब आया और उन्हें घर्षा लगा तो उन्होंने कहा कि: **यौमी मिनक या हुजरो यौम तवीलुन** (ऐ हुज्र तुम्हारे कत्ल से मुझे तवील रोज़ का समना होगा।)³ हुज्र व मुशक्क़त का ज़माना तूलानी होता है। लिहाज़ा इससे मकसूद यह है कि मुझे इस कत्ल के सबब से रोज़े क़यामत बड़ी तकलीफ़ व ज़हमत का सामना करना पड़ेगा।

अम्र बिनल हुमुक़ अल खुज़ाई एक बुज़र्ग़ थे जिनको हज़रत पैग़म्बर^{स०अ०} ने सलाम कहलवाया था और इसलिए बहुत बलन्द मर्तबा इन्सान समझे जाते थे।

उनकी गिरफ़्तारी का हुक्म हुआ और मुआविया की खुसूसी हिदायत के मुताबिक़ उन पर नौ वार नैजे के किये गए। हालाँकि पहले या दूसरे ही ज़ख़्म में वह जाँ बहक़ तस्लीम हो चुके थे।⁴

तारीख़ की तस्रीह (खुली हुई) के मुताबिक़ सबसे पहला सर जो इस्लाम में नैजे की नोक पर बलन्द किया गया था उनका सर था।

¹ तबरी जि/6, पेज/155

² तबरी जि/6, पेज/163

³ तबरी जि/6, पेज/143

⁴ तारीख़े जि/6, पेज/148

इन वाक्यात से शिअ्याने अली^{अ०स०} में तलातुम (हलचल) बर्पा हो गया। और हज़रत इमाम हुसैन^{अ०स०} पर भी सख्त असर हुआ चुनौनचे देनवरी ने लिखा है कि जब हुज़्र बिन अदी और उनके असहाब क़त्ल हो गए तो अहले कूफ़ा ने उसको बड़ी नागवार मुसीबत समझा और कुछ लोग अशराफ़े (बुजुर्गी) अहले कूफ़ा में से हज़रत इमाम हुसैन^{अ०स०} के पास गए और आपको इत्तेला दी। आपने कहा “इन्नालिलाहे व इन्नाएलहे राजेऊन” और यह वाक्या आपको बहुत शाक़ हुआ।⁵

ताहम आपने इस वाक्ये पर एक दम कोई इन्तेहाई क़दम उठाना मुनासिब नहीं समझा बल्कि आइन्दा हालात का बेचैनी के साथ इन्तेज़ार करते रहे। बेशक जब मुआविया को यह मालूम हुआ कि लोग इमाम हुसैन^{अ०स०} के पास शिकायत ले गए हैं और आपने भी उनके साथ इज़हारे हमदर्दी किया है तो उन्हें यह अन्देश पैदा हुआ कि कहीं आप मुख़ालिफ़त के लिए खड़े न हो जायें। इस बिना पर उन्होंने उनके नाम एक तहदीदी (सख्ती भरा) ख़त लिखा। उसके जवाब में अब हज़रत इमाम हुसैन^{अ०स०} ख़ामोश न रह सकते थे। आपने एक एक कर के अमीरे शाम की जो ख़िलाफ़ वर्जियाँ मुआहदे के मुतअल्लिक थीं वह गिनवाई और खुसूसियत के साथ हुज़्र बिन अदी वगैरह के क़त्ल को आपने मुअस्सिर (असर दार) अलफ़ाज़ में पेश किया और उस पर सख्त एहतिजाज फ़रमाया। जिसका ज़िक्र इस बाब के आख़िर में आयेगा।

पाँचवीं शर्त यह थी कि इमाम हसन^{अ०स०} और इमाम हुसैन^{अ०स०} या किसी को भी ख़ानदाने रसूल^{स०अ०} में से कोई नुक़सान पहुँचाने की कोशिश न की जायेगी। न खुफ़िया न एलानिया।

⁵ अख़बारुत्तुवाल, इरशाद पेज/206

इस शर्त की भी सरीह (खुली) ख़िलाफ़ वर्जि की गई। हालाँकि इस सुल्ह के बाद यह हज़रात मुल्की और सियासी उमूर से बिल्कुल बे तअल्लुक रहे मगर उसके बाद भी इमाम हसन^{अ०स०} बनी उमैया की ईज़ा रसानियों (तकलीफ़ पहुँचाना) से महफूज़ नहीं रहे। उसकी मुख़तलिफ़ सूरतें थी। पहले ग़लत प्रोपैगन्डे और बे बुनियाद इलज़ामात जिनसे उनकी रफ़अते (बलन्द) मर्तबा पर आम निगाहों में हर्फ़ आये वह लोग समझते थे कि ख़ानदाने पैग़म्बर^{स०अ०} के इन मुक़ददस अफ़राद की ज़िन्दगी इतनी पाक है कि उनके ख़िलाफ़ ऐसा जुर्म जो खुला हुआ उसूले शरियत के ख़िलाफ़ हो आयद करना किसी तरह मुफ़ीद न होगा। और वह हरगिज़ मुसलमानों की जमाअत में बावर (कुबूल) नहीं किया जा सकता इसलिए इस तरह के इलज़ामात लगाये जो शरअ के हुदूद के अन्दर तो हों मगर आम निगाहों में कुछ अच्छी हैसियत से देखे न जाते हों मसलन कसरते इज़दवाज (ज्यादा शादियाँ) और कसरते तलाक़। यह चीज़ बजाये खुद शरए इस्लामी में जाएज़ है लेकिन बनी उमैया के प्रोपैगन्डे ने उसको हज़रत इमाम हसन^{अ०स०} की निसबत ऐसे हौलनाक तरीक़े पर पेश किया जिससे लोग हज़रत इमाम हसन^{अ०स०} की निसबत कुछ अच्छी राय कायम न करें। इसी तरह दोनों भाईयों के इख़तिलाफ़े तबियत और इख़तिलाफ़े राय का प्रोपिगन्डा और ऐसी बहुत सी चीज़ें जो सिर्फ़ उमवी सियासत की पैदावार थीं।

दूसरे उम्माले बनी उमैया (बनी उमैया के कारिन्दे) और उनके हवा ख़्वाहों का हज़रत इमाम हसन^{अ०स०} से बुरा बर्ताव सख्त कलामी और दुशनाम तराज़ी (गाली गलौज) जिससे किसी वक़्त मुशतइल (गुस्सा) हो कर हज़रत

इमाम हसन^{अ०स०} या बनी हाशिम में से दूसरे लोग लड़ने मरने पर तैयार हो जायें। और इससे एक तरफ़ उन पर मुआहिदे की खिलाफ़ वर्जी का बे बुनियाद इलज़ाम आयद किया जा सके। दूसरे उनकी खूँरेजी का एक बहाना हाथ आये। उसका अन्दाज़ा इमाम हुसैन^{अ०स०} के इन अलफ़ाज़ से होता है जो आपने मरवान बिन हेकम को मुखातब करते हुए फ़रमाये हैं। उस वक़्त कि जब इमाम हसन^{अ०स०} की वफ़ात के बाद आपके जनाज़े पर मरवान रो रहा था। इमाम हुसैन^{अ०स०} ने कहा: “आज तुम रो रहे हो हालाँकि इसके पहले तुम ही उनको ग़म व गुस्से के घूँट पिलाया करते थे।” मरवान ने कहा: “ठीक है मगर वह सब मैं ऐसे इन्सान के साथ करता था जो इस पहाड़ से ज़्यादा कुव्वते बर्दाश्त रखने वाला था।”

मगर इस इन्तेहाई ज़ब्त और तुहम्मूल (बरदाश्त) के बाद भी इमाम हसन^{अ०स०} की जिन्दगी महफूज़ न रह सकी। सलतनत को जब कोई बहाना उनके खिलाफ़ खुले हुए जौरो सितम का न मिला तो फिर वह ख़ामोश हर्बा इस्तेमाल किया गया जो सलतनते बनी उमैया में अक्सर बड़ी मुहिमों के सर करने में सफ़र किया जाता रहा था। अमीरे शाम मुआविया ने अशअस बिन कैस की बेटी जाअदा के साथ जो हज़रत इमाम हसन^{अ०स०} की जौजियत में थी साज़ बाज़ करके उसको एक लाख दिरहम भिजवाये और यज़ीद के साथ शादी हो जाने का वादा किया और उसके ज़रिये से हज़रत को ज़हर दिलवा दिया जिससे आपके कलेजे के टुकड़े हो गए।⁶ जब आप की हालत दिगरगूँ (ख़राब) हुई तो आपने अपने मुख़तलिफ़ुल बत्न (सौतेले) भाई मोहम्मद बिन हन्फ़िया को बुला कर फ़रमाया कि देखो कहीं ऐसा न हो कि मेरे बाद हुसैन

से तुम इख़तिलाफ़ करो। हुसैन मेरे बाद इमाम हैं। और उनकी इताअत लाज़िम है। मोहम्मद ने निहायत खुलूस के साथ इकरारे वफ़ादारी किया और इमाम हुसैन^{अ०स०} की इताअत का वादा किया।⁷

फिर हज़रत ने इमाम हुसैन^{अ०स०} को पास बुलाया और वसीयत की कि मुझे गुस्लो कफ़न के बाद मेरे जद्दे बुजुर्ग़वार रसूले खुदा^{स०अ०} के रौज़े पर ले जाना ताकि एक मर्तबा ज़ियारते रसूल का शरफ़ और हासिल हो जाये।⁸ और मुझे यकीन है कि लोग यह ख़याल करते हुए कि मुझे वहाँ दफ़न किया जायेगा मुज़ाहमत (रोकेंगे) करेंगे। तो ख़बरदार इस बारे में एक कतरा खून भी गिरने न पाये। तुम मुझको मेरी दादी फ़ातिमा बन्ते असद की कब्र के पास जन्नतुल बकी में दफ़न कर देना।⁹

28/सफ़र सन 50 हिजरी को वह अमन व सुलह व सलामती का शहनशाह दुनिया से रुख़सत हो गया। इमाम हुसैन^{अ०स०} वसीयत के मुताबिक़ अपने भाई को गुस्ल के बाद ताबूत में लिटा कर रौज़-ए-रसूल की तरफ़ ले चले। बनी उमैया को यकीन हुआ कि आपको वहाँ दफ़न करेंगे। सबके सब मरवान के साथ हथियार बाँध कर निकल आये और बीच में सद्दे राह हुए। उस वक़्त बनी हाशिम को बहुत ज़्यादा इश्तेआल (बेचैनी) था मगर हुसैन^{अ०स०} अपने भाई इमाम हसन^{अ०स०} की वसीयत और फ़र्ज़ के एहसास से मजबूर थे। आप फ़रमा रहे थे कि खुदा की क़सम अगर भाई की वसीयत और उनके उसूल का पास न होता तो तुम देखते कि कैसी इस वक़्त तलवार चलती है।¹⁰ बहरहाल हज़रत इमाम हसन^{अ०स०} के जनाज़े को रौज़-ए-रसूल से वापस ले गए और जन्नतुल बकी में दफ़न कर

⁶ इरशाद पेज/197

⁷ काफ़ी जि/1, पेज/186 ⁸ काफ़ी जि/1, पेज/185 व 187

⁹ इरशाद, पेज/198 ¹⁰ इरशाद, पेज/199

दिया। ¹¹ फिर यह ख़बरें भी मालूम हुई कि अमीरे शाम ने इमाम हसन^{अ०स०} की वफ़ात पर इज़हारे मसरत किया और तअन व तशनीअ के कलिमात कहे। इत्तेफ़ाक़ से उस वक़्त इब्ने अब्बास दमिश्क में थे उन्होंने यह अलफ़ाज़ सुने तो कहा कि खुश न हो तुम भी हसन के बाद अरसे तक ज़िन्दा न रहोगे। ¹²

हज़रत इमाम हसन^{अ०स०} की वफ़ात बनी हाशिम के लिए एक सख़्त हादिसा थी, चुनौतिये इस सानेह—ए—अज़ीम पर बनी हाशिम एक महीना कामिल सोगवार रहे। ¹³ मगर इसके बाद भी इमाम हुसैन^{अ०स०} उसी रास्ते पर कायम रहे जो इमाम हसन^{अ०स०} ने कायम कर दिया था और इस तरह यह ख़याल बिल्कुल ग़लत साबित हो गया कि आपको अपने भाई से उसूली इख़तिलाफ़ था। और सिर्फ़ उनके दबाओ की वजह से आप उस पर कायम थे। ऐसा नहीं बल्कि आप उसी रास्ते को सही समझते थे और इसी लिए खुद साहिबे इख़्तियार होने के बाद भी उसी को बरकरार रखा। हालाँकि उस वक़्त शियों में हैजान भी पैदा हुआ जिसका तज़किरा तारीख़ इन अलफ़ाज़ में करती है कि जब हज़रत इमाम हसन^{अ०स०} की वफ़ात हुई तो इराक़ के शियों में हरकत पैदा हुई और उन्होंने इमाम हुसैन^{अ०स०} को लिखा कि हम लोग मुआविया की बैयत तोड़कर आपसे बैयत करने पर तैयार हैं मगर आपने फ़रमाया कि नहीं, हम में और मुआविया में मुआहेदा हो चुका है। इसका तोड़ना मेरे लिए सही नहीं है। बेशक जब मुआविया का इन्तेक़ाल होगा तो देखा जायेगा। ¹⁴

आप सब्र व सुकून के साथ तमाम शराएत की ख़िलाफ़ वर्ज़ी और हुकूमते शाम की चीरह

¹¹ काफ़ी जि/1, पेज/188 ¹² अख़बारुत्तवाल, पेज/224

¹³ मुस्तदरक हाकिम जि/3, पेज/173 ¹⁴ इरशाद, पेज/206

दस्तियों (सरकशी) को देखते और उनसे मुतअस्सिर होते रहे और उन्हें आप ने एक एक करके उस वक़्त ज़ाहिर कर दिया जब अमीरे शाम ने आपको एक तहदीद आमेज़ (सख़्ती भरा) ख़त लिया है। आपने उसके जवाब में एक तारीख़ी मक़तूब (लिखित) तहरीर फ़रमाया जो दर्ज ज़ैल है।

“तुम्हारा ख़त मिला जिसमें तुम ने लिखा है कि तुम ने मेरे मुतअल्लिक अपनी मुख़ालिफ़त के बारे में कुछ ख़बरें सुनी हैं जिनकी तुमको उम्मीद न थी। तुमको जो ख़बरें पहुँची हैं वह तुम्हारे खुशामदी लोगों और चुगलख़ोरों की पहुँचाई हुई हैं। जो इफ़तेरा (झूठ) और बोहतान की हैसियत रखती हैं। मैं इस वक़्त तुम से मुख़ासिमत और जंग का कोई इरादा नहीं रखता। और ख़ामोश हूँ मगर तुम को मालूम होना चाहिए कि मैं इस ख़ामोशी से खुश नहीं हूँ और यकीनन मुझे अपने इस सुकूत से यह अन्देशा है कि कहीं खुदा इसकी वजह से मुझ पर नाराज़ न हो। यह मेरी ख़ामोशी तुम्हारे लिए और तुम्हारे हवाख़ाहों (तरफ़दारों) के लिए कभी कोई सनद नहीं बन सकती। क्यों मुआविया! क्या तुम ही नहीं हो वह शख्स जिसने हुज़्र कन्दी को क़त्ल किया? क्या तुम ही वह नहीं हो जिसने ऐसे नमाज़ गुज़ारों और परहेज़गारों को क़त्ल किया जो जुल्म व बिदअत को पसन्द न करते थे। और दीन के मुआमिले में किसी शख्स की मलामत और सरज़निश की परवा न करते थे। हालाँकि तुम उनके साथ बड़ी क़स्में खा कर पुरख़्ता वादा कर चुके थे और उन्होंने न कोई फ़ितना मुल्क में पैदा किया था और न तुम्हारी मुख़ालिफ़त की थी मगर तुम ने उनको क़त्ल किये बग़ैर न छोड़ा। क्या तुम ही वह शख्स नहीं हो कि जिसने अम्र बिन हुमुक़ खुज़ाई सहाबि—ए—रसूल^{स०अ०} को

कत्ल किया जो ऐसा सालेह और इबादत गुज़ार बन्दा था कि कसरते इबादत से उसका जिस्म घुल गया था। बदन ढल गया था। कुव्वतें ज़ायल (ख़त्म) हो गई थीं और चेहरे पर ज़र्दी छा गई थी। तुम ने पहले उनको अमान दे दी, और ऐसा मज़बूत वादा किया था कि अगर ऐसा वादा किसी जानवर से भी किया जाये तो वह पहाड़ की चोटी से उतर कर पास आ जाए। फिर तुम ने बड़ी ज़सारत के साथ इस अहेद को तोड़ डाला और बे जुर्म व ख़ता उनको मार डाला। क्या तुम ही वह शख्स नहीं हो जिसने ज़ियाद बिन सुमैया को जो बनी सकीफ़ के गुलाम उबैद नामी का बेटा था अपना भाई, अपने बाप अबू सुफ़ियान का बेटा करार दिया। हालाँकि रसूल अल्लाह^{स०अ०} ने फ़रमाया है कि बेटा उसका समझा जायेगा जो औरत का असली शौहर हो, और ज़िना कार के लिए बस पत्थर हैं और कुछ नहीं। मगर तुम ने अपनी मसलहत की बिना पर रसूल^{स०अ०} को पसे पुशत डाल दिया और उसको अपना भाई बना कर इराकीन का हाकिम बना दिया ताकि वह मुसलमानों के हाथ पैर क़ता करे और उनकी आँखों को गर्म लोहे की सलाखों से फोड़े। और दरख़्तों की शाखों में लटका कर मारे। क्या तुम ही वह नहीं हो जिसे ज़ियाद बिन सुमैया ने लिखा था कि हज़रमीयीन अली के दीन पर हैं। तुम ने हुक्म दिया कि जो लोग अली^{अ०स०} के दीन पर हैं उनमें से एक को ज़िन्दा न छोड़ो। उसने सबको मार डाला और मुसला (जिस्म के टुकड़े करना) भी किया। और जो तुम ने मुझे लिखा है कि मैं अपने नफ़्स का, अपने दीन का और उम्मत मोहम्मदी का ख़याल करूँ और उनको फ़ितने में न डालूँ। और जमाअत की तफ़रीक़ से परहेज़ करूँ। तो मेरे ख़याल

में कोई फ़ितना इस उम्मत में तुम्हारी ख़िलाफ़त व हुकूमत से बढ़कर नहीं है। और मैं अपने नफ़्स, अपने दीन और उम्मत मोहम्मदी के लिए किसी फ़ायदे को इससे बढ़कर नहीं समझता कि मैं इन उमूर (काम) में तुम्हारी मुज़ाहमत (मुख़ालिफ़त) करूँ। अगर मैं ऐसा करूँ तो बेशक कुरबते इलाही का मूजिब (सबब) होगा और अगर तर्क करूँ और ख़ामोश रहूँ तो इसके लिए खुदा से इस्तेग़फ़ार करूँगा। और उससे रूशदो (हिदायत) सलाहियत का तालिब हूँगा।”

इस ख़त से इमाम हुसैन^{अ०स०} के तअस्सुरात का पूरे तौर पर अन्दाज़ा होता है और यह कि आप किसी अहम इक़दाम के लिए अपनी ज़िम्मेदारी को महसूस कर रहे थे। लेकिन इसके बाद भी आपने उस वक़्त तक बिल्कुल ख़ामोशी इख़्तियार की जब तक कि मुआहेदे की आखिरी साँस भी कायम समझी जा सकती थी। उसके बाद के वाक़ेयात आने वाले अबवाब (किताब के हिस्से) में नज़रे नाज़रीन होंगे।

दसवाँ बाब

यज़ीद की वली अहदी

मुआविया के लिए उनकी ज़िन्दगी का तवील दौर कम न था जिस में उन्होंने मुसलमानों की किसमत के मालिक बन कर अपने हौसले निकाल लिये थे। और दुनिया की जाहो हशमत और माल व दौलत के ख़ूब ख़ूब मज़े उठा चुके थे। जिसका एतेराफ़ उन्होंने एक ख़ास अन्दाज़ में खुद भी किया और कहा कि हम तो दुनिया में ग़लतों (खो गए) हो गए और लोट लोट के उस में रहे।¹⁵ मगर उन्होंने इस पर इक्तेफ़ा न की और यह चाहा कि उनकी

¹⁵ तबरी जि/6, पेज/186

औलाद भी इसी तरह बहरा अन्दोज़ (फ़ायदा उठाये) हो। हालाँकि वह मुआहेदे में यह शर्त कर चुके थे कि मैं अपने बाद किसी को ख़लीफ़ा नामज़द न करूँगा। फिर भी उन्हें फ़ि़र इस की हुई कि अपने बेटे को अपना जानशीन बना दें मगर वह यज़ीद के अफ़आल व आदात की वजह से समझते थे कि मुसलमानों को इस पर तैयार करना बड़ा दुशवार गुज़ार मरहला है। इस लिए वह उसको ज़बान पर नहीं लाते थे। ताहम रफ़ता रफ़ता (धीरे धीरे) उसके इन्तेज़ामात मुकम्मल कर रहे थे। उनमें से एक ऐसे बाअसर अफ़राद का जो मुद्दईये ख़िलाफ़त (ख़िलाफ़त का दावेदार) बन सकें ख़त्म करना था। चुनौनचे अब्दुर्रहमान बिन ख़ालिद बिन वलीद जिनका असर इस वजह से शाम में बढ़ गया था कि उनके वालिद के कारनामे रूमियों के मुकाबले में अहले शाम के ज़बाने ज़द (ज़बानों पर) थे और इस बिना पर मुआविया को अन्देशा था कि कहीं अहले शाम उनको ख़लीफ़ा तस्लीम न कर लें। लिहाज़ा उनका इलाज यह किया गया कि इब्ने असाल के ज़रिये से उनको ज़हर दिलवा दिया। जिससे उनका ख़ातिमा हो गया।¹⁶ मुआविया ने इब्ने असाल को इसका मुआवेज़ा यह दिया कि हमेशा के लिए टैक्स से मुस्तसना (अलग) कर दिया। और हमस के ख़िराज (टैक्स) की वसूलियाबी का उसे वाली क़रार दे दिया।¹⁷ मगर उसे इस रिशवत से फ़ायदा उठाने का ज़्यादा मौका नहीं मिला। इस लिए कि अब्दुर्रहमान के भाई महाजिर बिन ख़ालिद ने मदीने से दमिश्क़ जाकर अपनी तलवार से इब्ने असाल को क़त्ल कर दिया जिस पर मुआविया ने महाजिर को कैद की सज़ा दी

¹⁶ अल बुज़रा वल किताब पेज/16

¹⁷ तबरी जि/6, पेज/128

और एक साल के बाद रिहा किया।¹⁸ दूसरा कौल यह है कि अब्दुर्रहमान के बेटे ख़ालिद बिन अब्दुर्रहमान बिन ख़ालिद बिन वलीद ने अपने बाप के कातिल को हुमस जा कर वहीं तहेतेग़ किया। इस पर मुआविया ने उसको थोड़े दिन तक कैद किया, फिर दियत (खून बहा) लेकर रिहा कर दिया।¹⁹ यह सन 46 हिजरी का वाक़ेया है। उनके मुक़र्रबीन और गिर्दो पेश के रहने वाले इसका अन्दाज़ा रखते थे कि मुआविया की यह दिली ख़्वाहिश है कि वह यज़ीद को अपना वली अहेद बनायें मगर उन्हें भी इसके बरूए कार (उस पर अमल करने की) आने की सूरत नज़र न आती थी। सबसे पहले जिसने इस तअत्तुल और जुमूद (रूके हुए काम) को हरकत और अमल में तब्दील किया वह मुगीरा बिन शअबा दाई कूफ़ा था। यह शरख़्स बड़ा ही मुदब्बिर (ज़हीन) और अरब के निहायत चालाक लोगों में महसूब (शुमार) था। वाक़ेया यह पेष आया कि मुगीरा ने शायद फ़क़त इम्तिहान के तौर पर दमिश्क़ जा कर मुआविया के सामने हुकूमते कूफ़ा से इस्तीफ़ा देने का ख़याल जाहिर किया। वह समझता होगा कि अमीरे मुआविया मुझे किसी कीमत पर हटाने के लिए तैयार न होंगे और उसके बाद मेरी ख़शामद करेंगे। वहाँ मुआमिला बरअक्स (उलटा) हुआ और मुआविया ने एक दूसरे शरख़्स को कूफ़े की हुकूमत के लिए तज़वीज़ (चुन) किया। जब यह सूरत पेश आई तो मुगीरा ने हुकूमते कूफ़ा पर बरक़शर रहने के लिए तदबीर की कि वह यज़ीद के पास गया और उसे यह पट्टी पढ़ाई कि तुम अपने बाप से वली अहदी का ऐलान क्यों नहीं कराते।²⁰ कौन कह सकता है कि यज़ीद

¹⁸ अल बुज़रा वल किताब पेज/17

¹⁹ तबरी जि/6, पेज/129

²⁰ तबरी जि/6, पेज/169

खुद ही इसके वास्ते दिल ही दिल में बेचैन न होगा और अगर उसे शराब व कबाब के मशगलों में अब तक इस पर गौर करने का मौका न भी मिला हो तब भी मुगीरा का यह कहना उसकी दीवाना तबियत के लिए “हुए बस अस्त” से कम न था। वह मुआविया के पास गया और एक लाड प्यार से पले हुए बेबाक बेटे की तरह अपने बाप से बज़िद हो कर अपनी वली अहदी के लिए ख्वाहिश की और मुगीरा बिन शअबा के खयालात को जो इस बारे में थे बयान किया। मुआविया को तो कभी इसकी तवक्को होती ही न थी कि कोई संजीदा इन्सान इस मन्सब के लिए यज़ीद का नाम पेश करेगा। उन्होंने मुगीरा की गुफ्तगू सुनी तो समझे कि सूखे धानों पानी पड़ा। उन्होंने मुगीरा को बुलवाया और उससे इस बारे में तबादल-ए-खयाल किया। मुगीरा ने बड़े एतेमाद (भरोसे) के साथ बतलाया कि इस मुहिम का पूरा होना कोई मुशकिल नहीं है। कूफ़े में यज़ीद की मुवाफ़िक़त पर लोगों को हमवार करने के लिए मैं काफी हूँ। बसरा में ज़ियाद इस काम को अन्जाम देगा। इन दो मक़ामात के बाद फिर तीसरी कोई जगह ऐसी नहीं है जो यज़ीद की मुख़ालिफ़त की जुरअत कर सके। मुआविया ने मुगीरा की इन बातों को बड़ी तवज्जोह के साथ सुना और उसको कूफ़े की गवर्नरी पर बहाल कर दिया। मुगीरा फ़ौरन कूफ़े पहुँचा और इस मक़सद की तकमील में मसरूफ़ हो गया। उसे अपनी कार गुज़ारी का नतीजा जल्दी से मुआविया की ख़िदमत में पेश करके सिला हासिल करना और अपनी वफ़ादारी का सिक्का जमाना था। इसलिए उसने सबसे पहले जो ख़ास बनी उमैया के हवा ख़्वाह (चापलूस) थे उनको बुला कर अपने मक़सद का तज़क़िरा किया और बताया

कि “ख़लीफ़तुल मुसलिमीन” इस अम्र के मुतअल्लिक़ मुतमइन नहीं है कि कूफ़े के लोग इस वली अहदी को तस्लीम करेंगे। इस लिए ज़रूरत है कि यहाँ से एक वफ़द उनकी ख़िदमत में जाये और यह इल्तेजा पेश करे कि वह यज़ीद को अपना वली अहद करार दें। फिर भी ऐसे लोग कम मिलते थे जो इस वफ़द में शरीक होना पसन्द करें। इस के लिए मुगीरा को अपनी जेब ख़ास या ख़ज़ान-ए-सरकारी से 30 हजार दिरहम रिशवत में सर्फ़ (खर्च) करना पड़े। इस तरह कूफ़ियों का एक वफ़द मुरत्तब करके अपने बेटे मूसा की क़यादत में मुआविया से यज़ीद की नामज़दगी के लिए दरख़्वास्त पेश की। मुआविया इस इल्तेजा की हकीक़त को ख़ूब समझते थे चुनानचे उन्होंने वफ़द को मुनासिब जवाब देने के बाद एलाहदगी में मूसा बिन मुगीरा से पूछा कि सच बताओ कितने पर तुम्हारे बाप ने इन लोगों के दीन व ईमान को ख़रीद किया? मूसा न कहा तीस हजार दिरहम में।²¹

मुआविया को इस मुआमिले में मुसलमानों की राय-आम्मा (आम राय) के मुतअल्लिक़ अब भी इतमीनान न था। उन्हें जमहूर (अक्सरियत) की नफ़रत व बेज़ारी का ख़ौफ़ दामनगीर था। वह समझते थे कि मुगीरा के इस वफ़द को राय-आम्मा का तरजुमान नहीं समझा जा सकता। अब उन्होंने ज़ियाद बिन अबीह को जिसे वह सियासी तौर पर अपना भाई बना चुके थे। इस मुआमिले में मशवरा लेने के तौर पर ख़त लिखा। ज़ियाद को मुआविया की इस ख़्वाहिश का अन्दाज़ा बहुत अरसे से होगा। अब इस ख़त से इस ख़्वाहिश का इज़हार भी हो गया और यह ज़ाहिर है कि एक वफ़ादार गवर्नर की हैसियत से उसका क्या फ़र्ज़ होना

²¹ कामिल इब्ने असीर

चाहिए था खुसूसन जबकि मुआमला इसके “भतीजे” का था। मगर मुआमले की नज़ाकत और उसके तमाम पहलू ज़ियाद को लरज़ा बरअन्दाम (ख़ौफ़ज़दा) बना रहे थे। चुनौतियों ने उसने अपने खास महरमे राज़ (राज़दॉ) उबैद बिन काब नमीरी को बुला कर कहा, कि “ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन ने मुझे ख़त लिखा है कि उन्होंने यज़ीद की बैयत लेने का इरादा किया है मगर उन्हें लोगों की नफ़रत व बेज़ारी का ख़ौफ़ है और चाहते हैं कि किसी तरह जमहूर (अक्सरियत) मुसलिमीन मुत्तफ़िक़ किये जा सकें और इस बारे में मुझसे मशवरा किया है। इस्लामी जिम्मेदारी का एहसास बहुत अहम है और यज़ीद एक आवारा और मुतलकुल ऐनान (आवारह) शख्स है और शिकार का बड़ा दिलदादा है। तुम मेरी तरफ़ से सरकार के पास जाकर यज़ीद के अफ़आल व हालात का तज़क़िरा करो और कहो कि ज़रा सोच समझ कर इस काम को करें। थोड़े दिन की ताख़ीर कर लेना इस से बेहतर है कि जल्द बाज़ी से काम लिया जाये। जिसका नतीजा नाकामी की सूरत में जाहिर हो। उबैद ने इस में इतनी तरमीम की कि मुआविया को इस तरह दो टूक जवाब न दिया जाये बल्कि यज़ीद से मिलकर उससे कहा जाये कि अगर आपको राय आम्मा अपने मुवाफ़िक़ बनाना है तो इन अफ़आल को तर्क कीजिये जिन्हें मुसलमान उमूमन ना पसन्द करते हैं। ज़ियाद ने मुआविया को सिर्फ़ इतना लिखा कि इस बारे में ज़रा ताख़ीर से काम लिजिये। ताजील (जल्द बाज़ी) मुनासिब नहीं है।²² कहा जाता है कि उसके बाद यज़ीद ने अपनी बहुत सी बद आमालियों को तर्क कर दिया।²³ मगर बाद के हालात से अन्दाज़ा होता

²² तबरी जि/6, पेज/169 ²³ तबरी जि/6, पेज/170

है कि यह कीना (गुस्सा) यज़ीद के दिल में ज़ियाद की तरफ़ से पैदा हो गया बल्कि शायद हमसिनी की रकाबत से उसको यह ख़याल हुआ कि ज़ियाद ने यह मुख़ालिफ़त अपने बेटे उबैदुल्लाह के इशारे से की है इस लिए वह उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद से भी एक अरसे तक उसके बाद बदज़न रहा।

सन 49 हिजरी या सन 50 हिजरी में सत्तर बरस की उम्र में मुगीरा का इन्तेक़ाल हो गया।²⁴ अब कूफ़े में ज़ियाद की हुकूमत हो गई। वह सन 45 हिजरी में मुआविया की तरफ़ से बसरा, खुरासान और सजिस्तान का हाकिम बनाया गया था। फिर बहरैन और ओमान भी उसकी हुकूमत में शामिल कर दिये गए।²⁵ अब मुगीरा के मरने के बाद कूफ़ा भी उसकी हुकूमत में शामिल कर दिया गया। चूँकि इस तमाम क़लमरू (सलतनत) में बसरा और कूफ़ा दो अहम मक़ाम थे लिहाज़ा अब वह साल में छः महीना बसरा में रहता था और छः महीने कूफ़े में और इस मुद्दत में बसरे की हुकूमत पर समरा बिन जुन्दब को अपना कायम मक़ाम बना जाता था।²⁶ तीन या चार साल की मुद्दत गुज़रने पर 4 माह रमज़ान सन 53 हिजरी को ज़ियाद की भी वफ़ात हो गई।²⁷ अब शायद इस अन्देशे में कि रहे सहे खास खास ख़ैर ख़्वाह भी कहीं राहिये मुल्के अदम न हो जायें (मर न जायें)। मुआविया ने एक तहरीरी फ़रमान यज़ीद की वली अहदी का लिख कर मजमये आम में इसका एलान कर दिया और रिआया से उसका इक़रार लिया गया।²⁸

(बक़िया पेज नं० 18 पर.....)

²⁴ तबरी जि/6, पेज/131 ²⁵ तबरी जि/6, पेज/कृकृकृ

²⁶ तबरी जि/6, पेज/131 ²⁷ अन वुज़रा वल किताब, पेज/16

²⁸ तबरी जि/6, पेज/177

एक सरसरी मवाज़ना

ज़मीर यकीनन इंसान के आमाल की निगरानी करता है लेकिन अगर उसके साथ मज़हबी तालीमात न हों तो वह अपने काम को गैरमुकम्मल तौर से अंजाम देगा। इसके बर ख़िलाफ़ दीनी एतेकादात इंसान के अफ़आल की निहायत मुकम्मल निगरानी करते हैं। हमें इक़रार है कि ज़मीर के लिए यह मुमकिन है कि वह आमाले इंसानी की कड़ी निगरानी करके बाज़ औकात इंसान को दूसरे के हुकूक की पाएमाली और इसी तरह के दूसरे कामों से बाज़ रखे। लेकिन जब हम ज़मीर की निगरानी को मज़हबी एतेकादात और तालीमात के सामने रख कर दोनों का मुवाज़ेना करते हैं तो ज़मीर का पल्ला उनके बनिसबत बहुत हल्का नज़र आता है।

इसकी चन्द वजहें हैं:

1— ज़मीर के पास अपने मंशा को नाफ़िज़ करने के लिए कोई कुव्वत मौजूद नहीं है। जो लोग इसके अहकाम से सरताबी करें, उसकी आवाज़ की तरफ़ मुतावज्जे न हों, ज़मीर सिवाए उन्हें सरज़निश करने के कुछ नहीं कर सकता। बेशक यह भी नज़र आता है कि बाज़ लोग अपने ज़मीर के इंतेहाई ताक़तवर और जानदार होने यह उस जुर्म की संगीनी की वजह से जिसका उनसे इरतकाब हुआ है बीमार या पागल हो गए। ऐसा भी देखा गया है कि ज़मीर की सख़्त और पैहम मलामत से छुटकारे के लिए मुजरिम ने खुदकुशी कर ली। यह सब दुरुस्त मगर

हर शख़्स को यह मानना पड़ेगा कि ऐसे वाक़ियात बहुत कम पेश आते हैं। शायद सैंकड़ों मुजरिमों के बीच एक आदमी भी ऐसा न मिले जिसका ज़मीर इस हद तक ताक़तवर हो। फिर ऐसे मुज़ाहिरे उस वक़्त हुआ करते हैं जब ज़मीर के क़वी होने के साथ जुर्म भी संगीन हो। अक्सर व बीशतर इंसान मामूली और हल्के जुर्म किया करते हैं। ऐसी सूरत में ज़मीर का दबाव ऐसा शदीद कहां होता है जो बीमार या दीवाना बना दे?

मुख़तसर यह कि ज़मीर की सरज़निश और उसकी जानिब से आएद करदा रुहानी सज़ा इतनी नर्म है जिसे अक्सर लोग बर्दाश्त कर सकते हैं। इसी तरह अच्छे कामों की अंजाम देही के मौक़े पर ज़मीर की तरफ़ से इंसान को कोई क़ाबिले लिहाज़ इनआम नहीं मिलता है। आदमी पसंदीदा फ़राईज़ को पूरा करने के बाद अपने दिल व दिमाग़ में सिर्फ़ एक रुहानी सुकून और इतमीनान महसूस करता है। यह एहसास भी आम तौर से लोगों में बहुत थोड़ी देर के लिए पैदा होता है। इसके अलावा ज़मीर के ख़ज़ाने में कोई दूसरी चीज़ मौजूद नहीं है जिसे वह अपनी फ़रमांबरदारी के सिले में दे।

हो सकता है कुछ लोग ऐसे हस्सास हों कि उनके लिए रुहानी राहत व आराम हर माद्दी सिले और जज़ा से ज़ियादा लज़ज़त बख़्शा हो, लेकिन उन्हें पेशे नज़र रख कर गुप्तगु न करना चाहिए। समाजी बहसों में फ़ैसले अक्सरियत को सामने रखकर किए जाते हैं।

इक्का—दुक्का अफ़राद को इजतेमाई मबाहिस का मेयार नहीं करार दिया जा सकता।

इंसानी ज़मीर के बिल मुकाबिल मज़हब के पास अपने निफ़ाज़ और इजरा के लिए बहुत बड़ी ताक़म मौजूद है। दीनी अक़ाइद, खुदा और रोज़े आख़िरत का एतेकाद, अबदी और दाइमी नेमतों, सख़्त और इंतेहाई तकलीफ़ देह सज़ाओं का यकीन इंसान को बड़ी शिद्दत से मज़हबी उसूल व क़वानीन की पाबंदी पर आमामा करता है।

मज़हब से वाबस्ता इंसान एतेकादा रखता कि खुदा उसके दिल के तमाम भेदों से वाकिफ़ है। हर चीज़ और हर जगह की उसे ख़बर है। “कुर्रए ज़मीन और बे शुमार दूसरे कुर्रों के एक—एक ऐटम का वज़न उसकी निगाहे इल्म से ओझल नहीं है।” मज़हबी शख्स यकीन रखता कि उसका खुदा हर शै पर कादिर है, कोई दुशवारी उसके लिए दुशवार नहीं है, “ज़मीन और इन अजीमुश्शन आस्मानी कुर्रात में बिला इस्तेस्ना कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो खुदा को बेबस बना दे।” उसका अकीदा है कि मेरे नेक आमाल के एवज़ में बहिश्ते बरीं (स्वर्ग) की लाज़वाल नेमतें हैं और इससे बढ़कर खुदा की रज़ामंदी हासिल होगी जिससे बलंद किसी मानवी और रूहानी लज़ज़त का तसव्वुर नहीं किया जा सकता। इसी तरह मेरे आमाले बद की सज़ा भी इंतेहाई सख़्त है। जहन्नम के भड़कते हुए सियाह शोलों, दर्दनाक और जाफ़रसा शदीद तरीन अज़ाबों का सामना है। “जिसने एक नन्हे से ऐटम के वज़न के बराबर नेकी की वह जिसने इसी तरह एक हकीर ज़र्रे के मसावी बदी की वह भी उसके सामने रहेगी।” बिला शुबहा ऐसे खुदा और ऐसी जज़ा व सज़ा का यकीन ज़मीर की मलामत और

मदह के बनिस्बत बदरजहा ज़ियादा इंसान के रफ़्तार व किरदार पर असर अंदाज़ है। इसी लिए अक्सर ऐसा होता है कि इंसानी ज़मीर दूसरे फ़ितरी जज़बात और मुहर्रकात से शिकस्त खाकर ख़ामोश हो जाता है लेकिन खुदा और रोज़े आख़िरत पर ईमान बराबर मुकाबिला करता रहता और आख़िर में जज़बात के तूफ़ान को साकिन कर देता है।

मालूम हुआ कि मज़हब के पास अपने उसूल व अहकाम की पैरवी कराने के लिए जो ज़बरदस्त ताक़त मौजूद है वह इंसानी ज़मीर के पास अपने अवामिर व नवाही की इताअत कराने के वास्ते नहीं है।

2— ज़मीर ग़लत रास्ते की तरफ़ भी दावत दे सकता है क्योंकि उसके फ़ैसले का दारो मदार इदराकाते अक्ल के ऊपर है। यही वजह है कि रवासिम व आदात और माहैल से उसके फ़ैसलों में तबदीली हो जाती है। इसके अलावा वह अर्ज़ किया गया कि ज़मीर की गिरफ़्त से निकल जाना कोई मुश्किल बात नहीं है। इंसान अपने ज़मीर को धोखा दे सकता है। इसके बर ख़िलाफ़ (उलट) मज़हबी हिदायात और अहकाम की बाज़ ग़शत चूंकि खुदा की ज़ात की तरफ़ है लिहाज़ा उनकी सेहत और दुरुस्ती मूरिदे इतमीनान है। इसके अलावा कोई शख्स खुदा और रसूल को फ़रेब देने का तसव्वुर तक नहीं कर सकता। बेशक मज़हब के अहकाम की ग़लत और बेजा तौजीहें, तावीलें मुमकिन हैं लेकिन वह आख़िरत की हत्मी और यकीनी सख़्त तरीन सज़ाओं की सिपर नहीं बन सकतीं।

3— इशारा किया गया कि समाजी मसाईल में कम से कम इंसानों की अक्सरियत को पेशे नज़र रखना चाहिए। जो चीज़ महज़ चन्द आदमियों के दिल व दिमाग़ पर असर

अंदाज़ हो उसे मेयार और मीज़ान नहीं करार दिया जा सकता। यह बात बहुत नुमायां है कि अक्सर कौमों के अक्सर अफ़राद ऐसे तक्तवर और मोअस्सिर (प्रभावशाली) ज़मीर के मालिक नहीं हैं जो उनके अफ़आल की निगरानी मज़हब की तरह कर सकें। जिन लोगों को मज़हबी अफ़ाएद सही रास्ते पर गामज़न न कर सकें उन्हें बेचारा ज़मीर सीधे रास्ते पर कहां चला सकता है? यह महज़ ख़याली बात है कि नफ़सियाती तरबियत के ज़रिए ऐसे अश़्खास के ज़मीर को क़वी और मोअस्सिर बना दिया जाएगा। इंतेहाई मुतम्मद्दिन मुल्कों में ज़राएम की बढ़ती हुई तादाद हमारे दावे की मज़बूत शह़िद है। हां मज़हबी अफ़ाएद में ज़रूर ऐसी बेपनाह कुव्वत है जो पूरी नौए इंसानी या उसकी अक्सरियत को सही रास्ते पर चलने का पाबंद बना दे। यह दूसरी बात है कि मज़हबी अफ़ाएद को अपने तास्सुरात के लिए कभी आज़ाद नहीं छोड़ा गया। हर ज़माने में सही अफ़ाएदे दीनी की तरवीज व इशाअत के लिए मवाने रहे।

इस दावे के पायए सबूत तक पहुंचने के लिए ज़मानए जाहेलियत के अरबों पर नज़र कीजिए। अगर पैग़ंबरे इस्लाम(स.) अरबों के ज़मीर की तरबियत करके उन्हें अख़लाकी पस्तियों से नजात दिलाने की कोशिश करते तो हरगिज़ आपको वह कामयाबी हासिल न होती जिसके आप ख़्वाहां थे। आंहज़रत(स.) ने उनकी इस्लाह अख़लाकी खुदा और आस्मानी तालीमात की तरफ़ उन्हें मुतवज्जे करके फ़रमाई। इसके नतीजे में रसूल(स0) ने पूरी कौम की ज़ेहनियत में ऐसा ज़बरदस्त इंकलाब पैदा कर दिया जिसका इकरार तमाम दुनिया के मोअर्रेख़ीन को है। वह कौम जो हर हैसियत से ज़लील और पस्त नज़र आ रही थी मुख़तसर

अरसे में बलंदी के आस्मान पर मेहरे नीमरोज़ बन कर चमकने लगी। इस्लामी तरबियत और उसके तालीमात व अफ़ाएद का यह एजाज़ नहीं तो क्या था कि मक्के से मदीने की तरफ़ हिज़रत के बाद वहाँ के मक़ामी बाशिन्दों ने अपने इमलाक व अमवाल का आधा हिस्सा अपने नौ वारिद हम मसलक मुहाजिरीन को दे दिया।

नहीं कहा जा सकता कि उस ज़माने में अगर अख़लाकी इस्लाह की कोशिश तरबियते ज़मीर के रास्ते से की जाए तो वह ऐसी नतीजा खेज़ और सूद मंद होगी। यह सही है कि आज—कल के जदीद उलूम ने इंसानी अक्ल व फ़िक़र को हकाइक़ व वाक़ियात के कुबूल करने के लिए निस्बतन ज़ियादा आमादा बना दिया है, लेकिन इसी के साथ मौजूदा तमद्दुन ने गुज़िश्ता सादा ज़िंदगी के बनिस्बत इंसान के तवज्जुहात को ज़मीर की आवाज़ों की तरफ़ से मोड़ दिया है।

4— ज़मीर के तकाज़ों की पै दर पै मुख़लिफ़त से उसकी आवाज़ में इज़मेहलाल पैदा हो जाता, उसकी हैसियत उस हाकिमे माज़ल की करार पा जाती जिसे अपनी हुकूमत में रत्ती भर तसरुफ़ का मौका नहीं मिलता है। इसका मतलब यह है कि ज़मीर की आवाज़ ऐसे अश़्खास को अपनी तरफ़ मुतावज्जे कर सकती है जिन्होंने उसकी मुख़लेफ़त कम की हो, लेकिन ज़राएम पेशा अफ़राद के लिए उनके ज़मीर की आवाज़ का असर बहुत घट जाता है। इसका नतीजा यह हुआ कि ज़मीर की हुकूमत का दाएरा बहुत महदूद हो गया। इसके मुक़बिले में मज़हबी ऐतेकादात और दीनी तालीमात अगर दिल में अच्छी तरह रासिख़ हो जाएं तो इंतेहाई ज़राएम पेशा अश़्खास को भी सीधे रास्ते पर ला सकते,

उनकी तारीक जिंदगी को नूरानी बनाने की कुदरत रखते हैं।

गुज़िश्ता मारुज़ात का निचोड़ यह है कि एक तरफ़ ज़मीर की हुकूमत मुख़तलिफ़ हैसियतों से मज़हब की हुकूमत के बनिस्बत महदूद है, दूसरी तरफ़ अपने दाएरे सलतनत में भी उसे वह तसल्लुत व इक्तेदार हासिल नहीं जो दीन और मज़हब को हासिल है।

ताक़तवर और मोअस्सिर ज़मीर एक मुख़लिस, बे लौस, पाकदामन दोस्त के मानिंद है जो हमेशा इंसान के साथ-साथ रहता है। यह ख़ैर ख़्वाह दोस्त हमरा वक़्त इंसान को मुफ़ीद नसीहतें करता और सूदमंद मशवरे देता है। ज़ाहिर है कि ऐसा बलंद नज़र, वसीउल क़ल्ब, साएबुर राए दोस्त हर एक को नसीब नहीं होता है। जिन्हें हुस्ने इत्तेफ़ाक़ से ऐसा दोस्त मिल गया है वह सब इस मुख़लिस और बेलौस दोस्त की नसीहतों को कुबूल करने के लिहाज़ से बराबर नहीं हैं।

इससे क़तए नज़र कि यह मुख़लिस दोस्त ऐसा भोला और सीधा है कि उसे बा आसानी धोका दिया जा सकता है ग़लत तावीलें और तवज़ीहें करके मुतमइन बनाया जा सकता है। इसके अलावा उसके पास अपनी नसीहतों और हिदायतों के मताबिक़ अमल कराने के लिए कोई कुववत मौजूद नहीं है। वह अपने अवामिर व नवाही का पाबंद बनाने से आजिज़ है। उसका तसल्लुत व इक्तेदार, उसके असरात मज़हब के मुक़ाबिले में नहीं आ सकते।

दो काबिले तवज्जो एतेराज़

इस मक़ाम पर बहुत से एतेराज़ात किए जा सकते हैं लेकिन उनमें से दो तवज्जो के लायक़ हैं और उनके जवाब की ज़रूरत है।

पहला एतेराज़

कहा जा सकता है कि हमें इक़रार है कि तमाम समाजी और अख़लाकी बुराइयों की इस्लाह ज़मीर के बस में नहीं है। वह इंसान को जिंदगी की ऐसी शाहराह पर नहीं चला सकता जहां जुल्म व ज़ौर का बिल्कुल नाम व निशान न हो, लेकिन अगर इंसानी ज़मीर ऐसा नहीं कर सकता तो मज़ाहिब व अदयान भी अब तक ऐसी मुकम्मल इस्लाह नहीं कर सके हैं दूसरी लफ़्ज़ों में यूँ कहा जाए कि “मदीन-ए-फ़ाज़ेला” के ख़्वाब की ताबीर न ज़मीर दे सकता है और न मज़ाहिब दे सके हैं यह नक्स सिर्फ़ ज़मीर ही में नहीं बल्कि अदयान व मज़ाहिब में भी मौजूद है।

जवाब यह है कि हमने गुज़िश्ता बयानात में जो ज़मीर को इंसान के आमाल की निगरानी के लिहाज़ से नाक़िस क़रार दिया तो इसका मक़सद यह नहीं था कि जिस तबक़े में भी मज़हब पहुंचेगा उसके तमाम अख़लाकी मफ़सिद को दूर कर देगा। हमारा मक़सद यह था कि ज़मीर और मज़हब के दरमियान मुवाज़ेना किया जाए कि लोगों और क़ौमों की इस्लाह में कौन ज़ियादा मोअस्सिर है? अख़लाकी मफ़सिद की बेख़कनी में किस का ज़ियादा हाथ है? हम सिर्फ़ इतना साबित करना चाहते हैं कि इंसान के गुफ़तार व किरदार को काबू में करने के लिहाज़ से मज़हब ज़मीर से बदरजहा (कई गुना) ज़ियादा मोअस्सिर है। इंसानी आमाल की निगरानी के अलावा फ़र्द और जमाअत के नुक़तए इरतेका तक पहुंचने में अम्बिया के तालीमात से दूसरे गेराक़दर फ़वाएद हासिल होते हैं जिनमें से एक फ़ायदा भी ज़मीर नहीं पहुंचा सकता।



मुख्य समाचार

सहयूनी अदालत ने तेरह साल के फ़िलिस्तीनी बच्चे को चार माह कैद की सज़ा दे दी

सहयूनी अदालत ने फ़िलिस्तीन के कमसिन बच्चे को नक़्द जुर्माने अदा करने के साथ-साथ चार माह कैद की सज़ा भी सुना दी।

हासिया न्यूज़ के मुताबिक़, सहयूनी रियासत की अदालत ने फ़िलिस्तीनी कमसिन नव जवान के मुक़दमे को कई बार मुलतवी करने के बाद आख़िरे कार उसे नक़्द जुर्माना अदा करने के अलावा चार माह कैद की सज़ा भी सुना दी।

सूचना के अनुसार उस फ़िलिस्तीनी बच्चे को गर्ब अरदन के मगरिबी कनारे से एक पुर अमन एहतियाजी मुजाहिरे के दौरान सहयूनी फ़ौजियों ने गिरफ़्तार कर लिया था। तेरह साल के इस फ़िलिस्तीनी बच्चे का नाम अब्दुर रऊफ़ है उसके दो और भाई भी सहयूनी फ़ौजियों के ज़ेरे हिरासत हैं।

वाज़ेह रहे कि सहयूनी रियासत फिलिस्तीन के कमसिन बच्चों को मुख़तलिफ़ बहानों से गिरफ़्तार करके उन्हें जेल में बन्द कर रही है ताकि फ़िलिस्तीनी नव जवानों से उनके मुस्तक़बिल को छीन सके।



मस्जिदे अक्सा पर यहूदी आतंकवादियों का हमला, मस्जिद की बे हुरमती

मस्जिदे अक्सा में एक बार फिर यहूदी आतंकियों ने घुस कर नमाज़ियों पर हमला किया और मस्जिद की बे हुरमती की।

जासिया न्यूज़ के मुताबिक़, 54 शिद्दत पसन्द यहूदियों ने इस्राईली फ़ौज की भारी नफ़री के साथ मस्जिदे अक्सा में घुस कर नमाज़ियों को मारते पीटते हुए मस्जिद की बे हुरमती की जबकि वहाँ पर मौजूद फ़िलिस्तीनी मोहकमा-ए-औकाफ़ के मुक़र्रर कर्दा एक मुहाफ़िज़ को हिरासत में ले लिया।

यहूदी शर पसन्दों की इस वहशियाना हरकत की वजह से फ़िलिस्तीनियों के दरमियान शदीद ग़म व गुस्सा पाया जा रहा है।

नामा निगार ने मज़ीद तफ़सील बयान करते हुए कहा कि इस्राईली फ़ौज की इश्तिआल अंगेज़ी पर एक मुहाफ़िज़ ने एतिराज़ किया तो यहूदी शर पसन्दों ने फ़ौज तलब कर ली जिन्होंने किब्ल-ए-अव्वल के एक पहरे दार ख़लीलुल तहूनी को हिरासत में लेने के बाद ना मालूम मक़ाम पर मुनतक़िल कर दिया।

यमन की इस्लामी तन्ज़ीम अनसारुल्लाह ने अहम पहाड़ी पर कब्ज़ा कर लिया

अहलेबैत न्यूज़ एजेन्सी अबना के मुताबिक यमन की इस्लामी तन्ज़ीम अनसारुल्लाह ने सूबा अल-बैज़ा में सऊदी अरब के हिमायत याफ़ता किराए के फ़ौजियों को शिकस्त देकर अहम पहाड़ी सिलसिले का कन्ट्रोल सम्भाल लिया है। इत्तिलाआत के मुताबिक अनसारुल्लाह के अहलकारों ने सूबा अल-बैज़ा में नाते इलाक़े के मरकूज़ा पहाड़ी सिलसिले पर कब्ज़ा कर लिया है।

सऊदी अरब के जंगी तय्यारे उस इलाक़े पर बमबारी जारी रखे हुए हैं लेकिन इसके बावजूद अनसारुल्लाह के मुज़ाहिमत-कारों ने अहम पहाड़ी सिलसिले का कन्ट्रोल सम्भाल लिया है। उधर सऊदी अरब ने अल-जौफ़ सूबे में बमबारी की है जिसमें यमन के मुताहिद शहरी शहीद और ज़ख्मी हो गए हैं।

(बकिया पेज नं० 12 का.....)

वाक़ेयात बतलाते हैं कि मुगीरा बिन शॉबा बड़ी हद तक कूफ़े की ज़मीन को हमवार बनाने का काम कर चुका था और कम अज़ कम हवा ख़्वाहाने (चापलूस) बनी उमैया को उसके लिए तैयार कर लिया था। बसरा में बहरहाल उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद को इस इस्कीम की तकमील करना लाज़िम थी। चाहे उसकी ज़ाती राय इस बारे में कुछ भी होती और वहाँ की ख़िलक़त (अवाम) उसके बाप से और खुद उससे इस दर्जा मरऊब व ख़ाएफ़ थी कि वहाँ किसी मुख़ालिफ़त का इमकान न था और शाम तो अपना मुल्क ही था। ले दे कर वहाँ एक अब्दुर्रहमान बिन ख़ालिद बिन वलीद थे जिन से अन्देशा होता उन्हें पहले ही ख़त्म किया जा चुका था। दूसरे मक़तूल ख़लीफ़ा उसमान के बेटे सईद थे। उन्होंने ज़रा ख़िलाफ़ते यज़ीद पर इज़हारे नाराज़गी किया और खुद मुआविया के पास आकर कहा कि आपने यज़ीद को मुझ पर मुक़द्दम किया और उसके लिए बैयत ली हालाँकि बख़ुदा आप जानते हैं कि मेरे बाप उसके बाप से बेहतर और मेरी माँ उसकी माँ से अच्छी और मैं खुद उससे बेहतर हूँ और आपको जो कुछ मिला है यह मेरे बाप का सदका है। यह सुनकर मुआविया ने कहा कि तुम ने जो अपने बाप के एहसान का मुझ पर ज़िक्र किया तो मुझे इसका इन्कार नहीं मगर मैंने इसका एवज़ (बदला) यह कर दिया कि उनके खून का मुतालिबा किया और कातिलों से उनका बदला लिया और तुम्हारे बाप की फ़ज़ीलत, इस में भी कोई शक नहीं कि मुझसे बेहतर थे और उन्हें रसूले खुदा^{स०अ०} से क़राबत मुझसे ज़्यादा हासिल थी, इसी तरह तुम्हारी माँ की फ़ज़ीलत। इस में भी कोई शक नहीं क्योंकि क़रशिया की बुजुर्गी कल्बिया पर ज़ाहिर है लेकिन यह बात कि तुम यज़ीद से बेहतर हो तो मालूम होना चाहिए कि मेरे नज़दीक अगर तुम ऐसों से मेरा घर भरा हो वह सब मिलकर भी यज़ीद के बराबर न होंगे।